मैं पूछूं?

ऋषभ शुक्ला

मैं पूछूं?
कि तुम जी रहे या मर गए?
तुम कह देना कि तुम जीते जी मर गए।
अच्छा एक बात बताओ,
जो भी तुम्हे बतानी है,
कुछ ख्वाब हैं तुम्हारी आंखों में,
और कुछ एक दि खाने हैं।
मैं ठहरा और तुमने कहा,
"ठहरना मना है"
मैंने जीना चाहा तो तुमने कहा,
"जीना माना है"
मैंने चाहा मरना तो सबने कहा,
"मरना भी मना है"।
तो बोलो फिर स्वीकार क्या है?
तुमने एक स्वर में हुंकार भरी, कि
"जीते जी मरते रहना" ।

मैंने देखी तुम्हारी आंखें तो,
सपने नदारद,
मैंने देखें तुम्हारे होंठो को,
तो मुस्कान नदारद।

मैंने तुमसे पूछा, कि कहां हैं दोनो?
जवाब दो? कहां हैं दोनो?,
ओ हेलो? क्या हुआ? सोच में पड़े रहोगे?
मुझे जीने दोगे, या अब भी अड़े रहोगे?
मैं देखता हूं फिर तुम भागते हो,

सारी शर्म उस बटन में टांकते हो।
थोड़ी हिम्मत से आकर बैठते हो,
फिर एकटक मुझको देखते हो।
तुमने धीमे स्वर में स्वीकार किया,
झूठ बोलने से अब इनकार किया।
मेरे सारे सपने सेठ की तिजोरी में ठहरे,
मेरी मुस्कान पर भी नजाने कितने पहरे।
फिरभी मैं पूछूं?

सिर्फ़ इतने थोड़ी हो तुम

कितने ही ख्वाब सादगी में देखे,

महकते फूल, ढलती शामें, चिड़ियों से भरे आसमान में,

जब कोई पूछे कि प्रेम कहां?

तो बोलना संघर्ष के पसीने में नहाया है वो,

बस अभी, सिर्फ अभी,

और बहते चोट पर ठंडी हवा का झोंका इतराए,

तब कहना प्रेम यहां सिर्फ वहां।

कभी बारिश भीगा दें जिंदगी के थपेड़ों के बीच,

तब जो हाथ थाम कर समेट ले बाहों में कसके और फेंक दे दुनिया में,

कहके कि " सिर्फ इतने थोड़ी हो तुम! ",

तो बाहों से हटकर चूम लेना उस झंझावात को,

और समझना प्रेम उस क्षण मुस्कुरा रहा हो जैसे।

फिरभी कोई गर पूछ भी ले कि प्रेम कहां?

उसको दिखाना जख्मों से कटी हथेलियां,

और उससे झलकती नसों की फड़फड़ में बहती आग की ज्वाला,

और आंखों में प्रेमी से मिली तोहफे की हिम्मत,

फिर भी कोई अंत में पूछ ले,

की प्रेम कहां?

तो नहीं बोलना कुछ भी , ना ही कोई नाम,

एक छोटी सी मुस्कान में सिमटा हो तुम्हारा सारा संसार।

ऋषभ शुक्ला